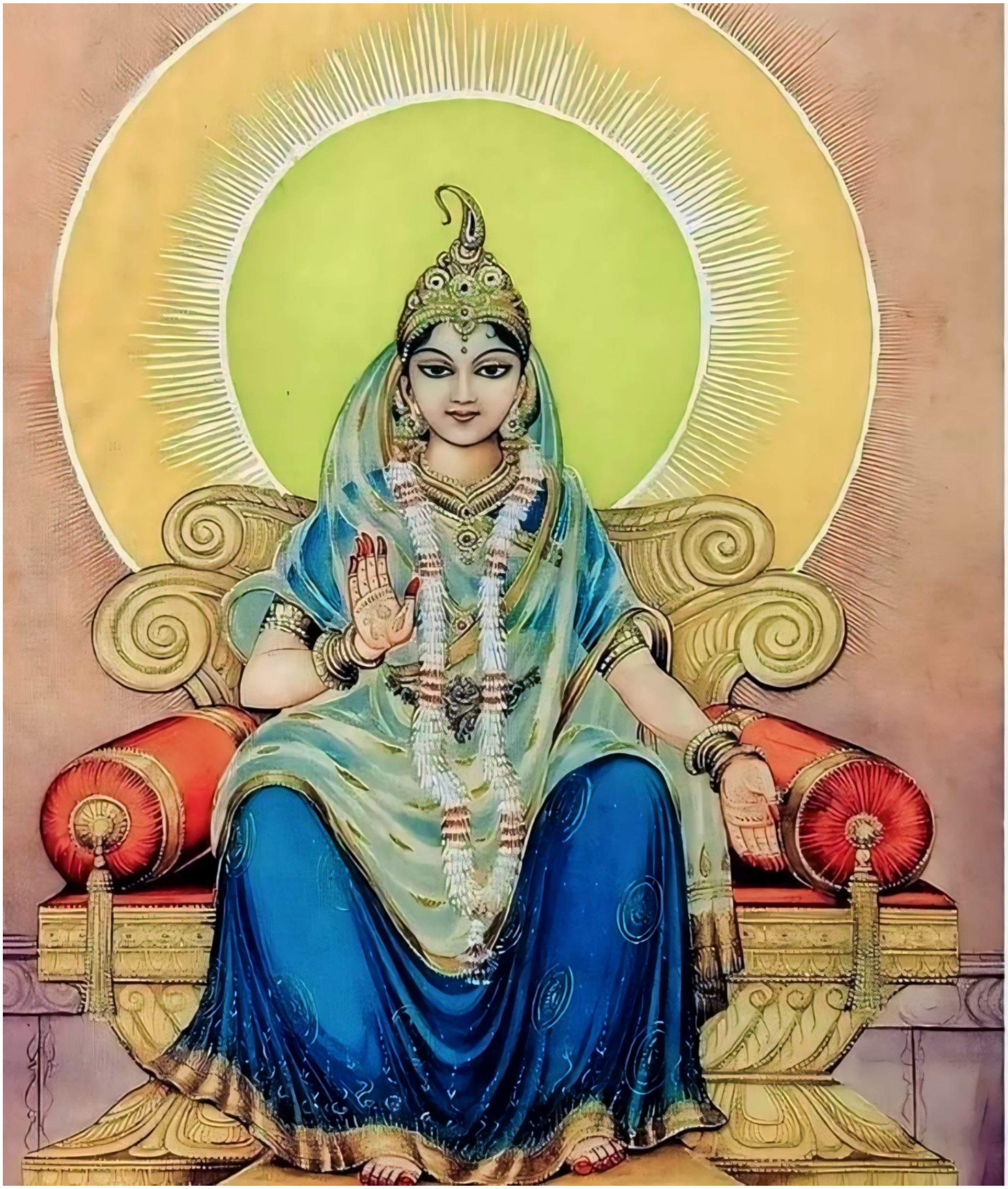

श्रीभगवान उवाच:-

अष्टोत्तर शतं नाम्नां मत्प्रियायाः प्रकीर्तयेत्।
संतुष्टा तेन सहजता मामेव भावयेत् प्रियाः।।
सहजा जानकी सीता मोहिनी राधिका रमा।
आनन्दिनी परालीला ललना लास्यकारिणी।।
सीरध्वजसुता साध्वी गान्धर्वी पद्मगन्धिनी।
गोपीराजसुता गोपी गोपिता नन्दनात्मजा।।
सुखितोत्साहिनी सौम्या रत्नाचलविलासिनी।
प्रमोदवनमध्यस्था कुंजस्था कुंजगेहिनी।।
राघवेन्द्रप्रिया रामा लोलुपा जारसंगिनी।
रत्नाचलदरीस्थाना भाविनी भावभुषीता।।
रामप्रिया रामरता रामकाम्या कृपावली।
किशोरी कन्दुकक्रीडा चित्रकुटकृतालया।।
रासकेलिरतिः स्निग्धा मन्दारवनवासिनी।
अशोकवनगावल्ली हृल्लासकविधायिनी।।
गोपवंशध्वजपटी रघुवंशविलासिनी।
विनोदिनी चिरवधुविदुका वरांगना।।
अक्षक्रीडाहृतजया जयदा जयवर्धिनी।
उच्चैः स्वररता वीणा दिव्यगानमनोहरा।।
देवीजनकृतस्तोत्रा स्तुता सामगसेविता।

सावित्री शेवधिः सेव्या भक्तिः प्रेमस्वरुपिणी।।
प्रेमदा प्रेमघुणाक्षी लाण्यवनवाटिका।
साकेतपुरलक्ष्मीश्च महामण्डपमध्यगा।।
खण्डिता विप्रलब्धा च स्वाधीनपतिका प्रिया।
कलहान्तरिता चैव तथा वासकसज्जिका।।
अभिसारी प्रोषिततोक्ता राघवी चाष्टनायका।
सुदती सुमुखी सुभ्रुः सुनासा सुकपोलिनी।।
दुती दुतीजनप्रीता रक्ताम्बरधरालिनी।
लोलाक्षी लास्यललिता वने यौवन शालिनी।।
सुधावर्षा सुधाधारा सुधाकरमुखी सुधा।
गर्विणी दुर्जया दुर्गा सपत्नीगर्वहारिता।।
कोमलालपिनी काम्या कुमारी रामवल्लभा।

इति एतत् कथितं सीता नाम्नामष्टोत्तरं शतं।
सायं प्रातः कीर्तयेद् यो रामस्तस्मै प्रसीदति।।
स्वं लोकं दर्शयित्वा सा प्रद्याद् राम सन्निधिम्।
यद्यत् कामयते चित्ते तत् तत् फलमवाप्नुयात्।।